

Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

——
संस्कृत से ही वाणी और हृदय का संस्कार

——
Document Information



Text title : Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

File name : sanskRRitasehIvANIaurahRRidayakAsanskAra.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



—
संस्कृत से ही वाणी और हृदय का संस्कार
—

संस्कृत भाषा ही मानव को सचमुच संस्कृत करती
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष हरती । ०
इसके पढ़ने से ही होता शब्दों का संस्कार,
प्रकृति और प्रत्यय का करती सम्यग् विशद विचार,
अपशब्दों के उच्चारण को इसने माना पाप,
एक वर्ण का भी है दूषित उच्चारण अभिशाप,
कौन अन्य भाषा है ऐसी शुद्ध भावना भरती ?
संस्कृत भाषा ही मानव को सचमुच संस्कृत करती । १
वाणी की ही भाँति हृदय को भी यह शुद्ध बनाती,
प्रतिदिन दूषित आचरणों से बचना यह सिखलाती,
एक सत्य ही इसके सारे शास्त्रों का है ज्ञेय,
भाव-शुद्धि ही इसकी सारी शिक्षाओं का ध्येय
जैसा इसका नाम काम भी वैसा ही है करती,
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष हरती । २
- रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

—
Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

pdf was typeset on May 19, 2024

—
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com